महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की प्रमुख घटनाएं

सन्	विवरण	स्थान
1824	महर्षि दयानंद का जन्म (माता पिता ने मूलशंकर नाम रखा)	टंकारा
1834	यज्ञोपवीत संस्कार	टंकारा
1838	शिवरात्रि पर बोध (सच्चे शिव के खोज की तीव्र इच्छा)	टंकारा
1846	गृह त्याग	टंकारा
1846	सायला में ब्रह्मचर्य दीक्षा। (मूलशंकर से शुद्धचैतन्य बने)	सायला
1846	मेले में पिता से अन्तिम भेंट	सिद्धपुर
1848	स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा। (शुद्धचैतन्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती बने)	चाणोद
1860	गुरु विरजानन्द जी से भेंट और पठन-पाठन आरम्भ	मथुरा
1863	गुरु दक्षिणा देकर गुरु धाम से विदा	मथुरा
1863	यमुना किनारे विराजमान। यहीं पर पहली पुस्तक 'सन्ध्योपासना' की रचना की	आगरा
1866	अजमेर नगर में पादरियों से शास्त्रार्थ	अजमेर
1867	कुम्भ के मेले में भीमगोडा के ऊपर खण्डन पताका की स्थापना	हरिद्वार
1868	मदान्ध राव कर्णसिंह की तलवार के टुकड़े किये	कर्णवास
1869	काशी में वहाँ के पण्डितों से ऐतिहासिक शास्त्रार्थ	काशी
1873	केशवचन्द्रसेन से भेंट	कलकत्ता
1875	मुम्बई के गिरगांव मुहल्ला में पहली आर्यसमाज की स्थापना	मुम्बई
1875	पूना प्रवचन	पूना
1877	मौलवी, पादरी और पण्डितों से एक साथ शास्त्रार्थ	चाँदापुर
1877	आर्य समाज के नियमों को अन्तिम रूप दिया	लाहौर
1877	ब्रह्मचर्य बल से बग्घी को रोकना	जालन्धर
1877	प्रथम हिन्दू अनाथालय की स्थापना	फिरोज़पुर
1878	कर्नल स्काट और मैडम ब्लैवटस्की से भेंट	सहारनपुर
1878	प्रथम गोशाला की स्थापना	रेवाड़ी
1879	मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) से भेंट	बरेली
1881	पण्डित लेखराम की भेंट	अजमेर
1882	राणा सज्जनसिंह द्वारा एकलिंग महादेव की महन्ती का प्रस्ताव ठुकराना	उदयपुर
1883	परोपकारिणी सभा की स्थापना एवं तथा अधिकार पत्र (वसीयत) का लेखन	उदयपुर
1883	वेश्या रखने पर राजा यशवन्तसिंह को फटकार।	जोधपुर
1883	अंतिम विषपान	जोधपुर
1883	दीपावली के दिन भिनाय कोठी में देहत्याग	अजमेर